412
H 67 P

* बन्देमातरम् *

गांधी बिगुल

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

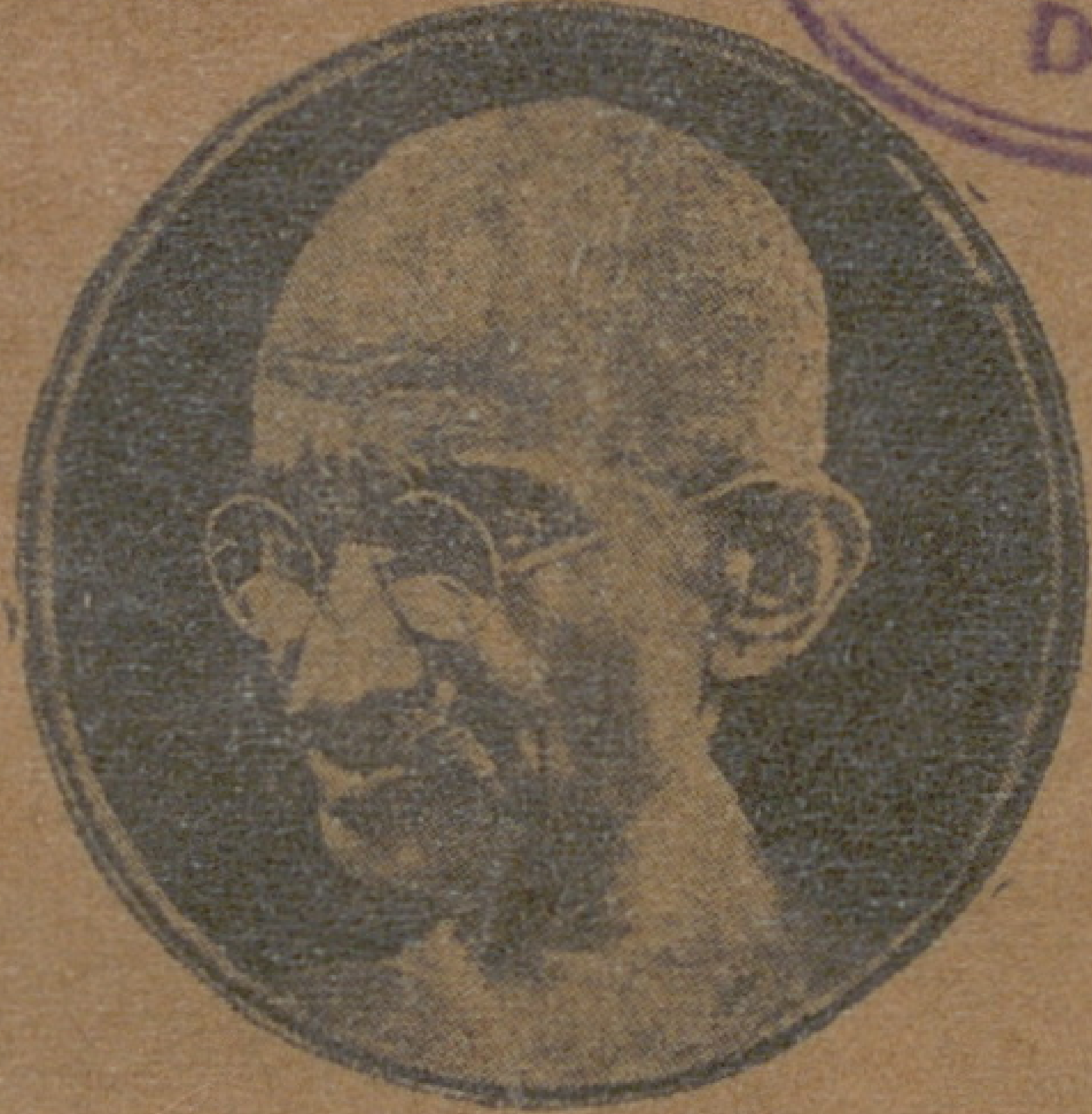

मूल्य एक पैसा।

प्रकाशकः-

सत्याग्रह कमेटी, कानपुर

अग्रवाल प्रेस-कानपुर

891.43
G151G

❀ बन्देमातरम् ❀

गांधी बिगुल

प्रकाशक :--

सत्याग्रह कमेटी, कानपुर।

मूल्य एक पैसा

झण्डा गायन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा॥ झण्डा०
स्वतंत्रता के भीषण रणमें, लखकर बढ़े जोश क्षण क्षण में।
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जाये भय संकट सारा॥ झण्डा०
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा॥ झण्डा०
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥ झण्डा०
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥ झण्डा०
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

निकल पड़ो अब बनकर सैनिक भंग करो फरमानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे क़ौल रहे मरदानों का॥
अंधी होकर पुलिस चलावे डंडे कुछ परवाह नहीं।
घर का माल लूट ले जावे निकले मुंह से आह नहीं॥
जेल यातना हो निर्दय दल करे गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमिरन कर वीरो! सहते जाओ अत्याचार॥
कायर, कुपूत, निर्लज्ज देश के लखैं दृश्य बलिदानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे क़ौल रहे मर्दानों का॥
आत्मिक बल से आज हटा देंगे भारत से ब्रिटिश निशान।
होय निहत्थों पर मार्शल्ला शहरों गांवों के दर्म्यान॥
नर नारी बच्चों को गोरे अत्याचारी खूब हनें।
भारत के कोने कोने में जलियां वाले बाग बनें॥
चिन्ता नहीं बहे लहराता चहुं दिशि खून जवानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे क़ौल रहे मर्दानों का॥

(३)

घर घर में क्रान्ति मचावेंगे। भारत स्वाधीन बनावेंगे॥
देखो, माँ का आह्वान हुआ, आज़ादी का सामान हुआ।
वेदी पर यज्ञ-विधान हुआ, फिर मुर्दा जोश जवान हुआ॥
मचला है मन मिट जावेंगे। भारत स्वाधीन बनावेंगे॥ १
नवयुग के नवउद्गारों का, दुश्मन के प्रबल प्रहारों का।
ज़ंजीरों कारागारों का, स्वागत है अत्याचारों का॥
जीवन का मोह जलावेंगे। भारत स्वाधीन बनावेंगे॥ २

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 412
Date 9.12.71
G... INDIA

गोदी के लाल लुटावेंगी, माताएं बलि बलि जावेंगी।
माथे पर शिकन न लावेंगी, पति को पत्नियां पठावेंगी॥
ज़ालिम सरकार मिटावेंगे। भारत स्वाधीन बनावेंगे॥ ३
बहिनो और भाइयो आओ, माता का मान बचा जाओ।
प्राणों की आहुति ले धाओ, गान्धी का हुक्म बजा लाओ॥
दूषित दासता भगावेंगे। भारत स्वाधीन बनावेंगे॥ ४
वीरो! आओ सुख दुख झेलो, अब उठो आज खुलकर खेलो।
माता की अब आशिष लेलो, मौका है तन मन धन देलो॥
लन्दन तक शीघ्र हिलावेंगे। भारत स्वाधीन बनावेंगे॥ ५

(४)

करो सब सिंह नाद घनघोर, चलो अब बलिवेदी की ओर।
प्राणों का भय मोह छोड़कर, दमन दासता दुर्ग फाड़कर॥
बलिदानों से नेह जोड़ कर, सारे बन्धन पाश तोड़कर।
गहो स्वत्व का छोर, चलो अब बलिवेदी की ओर॥
भय न हृदय में आने पाये, जीवन रहते आन न जाये।
शत्रु हृदय सुन सुन दहलाये, विजय ध्वजा घर २ फहराये॥
जय जय जय हो शोर, चलो अब बलिवेदी की ओर।
भारत के तुम भारत वासी, क्रांति उपासक भ्रांति विनाशी॥
निर्भय सत्य विवेक विकाशी, तुम्हें खेल लगती है फाँसी।
रोको ज़ालिम ज़ोर, चलो अब बलिवेदी की ओर॥
छिड़ी राष्ट्र की विकट लड़ाई, ले लो वीरो विशद बड़ाई।
मिट जायेगी ये कठिनाई, अवसर मत खो देना भाई॥
अज़मालो सब ज़ोर, चलो अब बलिवेदी की ओर।

झंडा रहे सदा फहराता, बहे लहू अपना लहराता॥
तना रहे वीरों का छाता, कहो अभय जय भारत माता।
ये है क्रान्ति हिलोर, चलो अब बलिवेदी की ओर॥

(५)

भारत न रह सकेगा, हरगिज़ गुलामख़ाना।
आज़ाद होगा होगा, आया है वह ज़माना॥
अब भेड़ और बकरी, बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का, होगा कहीं ठिकाना॥
खूं खौलने लगा है, हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का, अब बन्द ज़ुल्म ढाना॥
परवाह अब किसे है, इस जेल औ दमन की।
एक खेल हो गया है, फांसी पै झूल जाना॥
क़ौमी तिरँगे झण्डे पर, दिल फ़िदा है अपना।
हिन्दू मसीहो मुस्लिम, गाते हैं ये तराना॥
भारत वतन है अपना, भारत के हम हैं बच्चे।
भारत के वास्ते है, मंज़ूर सर कटाना॥

(६)

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत का चरचा गैर की महफिल में है॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कहरहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥

अब न पहिले बलबले हैं औ न अरमानों की भीड़।
सिर्फ मर मिटनेकी हसरतइस दिले बिसमिल में है॥
रह बरे राहे मोहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहराने वर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक्त आने दे बतादेंगे तुझे ऐ आस्मां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
यूं सताने को सताले पर त इतना देखले।
कोई भी हसरतज़दा मुझ सा तेरी महफ़िल में है॥

(७)

बिगुल बज गया सुनो हुशियार। जवानों हो जाओ तैयार॥
छिड़ी है आज़ादी की जङ्ग। उठो फिर लेकर नई उमंग॥
चलो मिल कोटि कोटि एक संग। देख कर दुश्मन होवें दंग॥
तुम्हीं को ताक रहा संसार॥ जवानों० ॥
समर का सारा साज सँभाल, चलो अब ऐ माई के लाल॥
निडर हो मरकर लो जय-माल। न नीचा हो भारत का भाल॥
मची है चारों ओर पुकार॥ जवानों० ॥
डरो मत मन में रक्खो धीर। रहेगा अमर न सदा शरीर॥
गुलामी की तोड़ो ज़ंजीर। अरे टुक देखो माँ की पीर॥
किस लिये चुप बैठे मन मार॥ जवानों० ॥
समर फिर आया वर्षों बाद। क्रान्ति का सुनलो सिंहनिनाद॥
जिओ जग में होकर आज़ाद। या कि फिर हो जाओ बरबाद॥
मिटा दो अन्यायी सरकार। जवानों० ॥
देश के कुछ तो आओ काम। चलो भर्ती हो तज धन-धाम॥

जगाओ भारत माता का नाम। ये गान्धी का अन्तिम संग्राम॥
न आएगा यों बारम्बार॥ जवानों० ॥
सुनो सेनापति का आह्वान। निकालो अब अपने अरमान॥
मचाओ बढ़ बढ़ कर घमसान। चढ़ाओ वेदी पर बलिदान॥
खुला है तुम्हें स्वर्ग का द्वार ॥जवानों० ॥

(८)

हम लेकर छोड़ेंगे इसको स्वराज हमारा हक़ है॥
सब कुछ क़ुर्बान करेंगे, वेदी पर शीश धरेंगे।
बंधन से नहीं डरेंगे, क्या चिंता अगर मरेंगे॥ हम लेकर०
भारत यह देश हमारा, है प्राणों से भी प्यारा।
सुख और शान्ति की धारा, तन मन धन इसपर वारा॥ हम०
प्यारो सब भेद मिटाओ, बस कर्मवीर बन जाओ।
आत्मा का तेज दिखाओ, गांधी की बिजय मनाओ ॥हम लेकर०

(९)

खादी का डंका घर घर में, बजवा दिया गांधी बाबा ने।
मिट्टी में लङ्काशायर को, मिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
देशी खद्दर, देशी धोती, खादी का कुरता टोपी है।
ओढ़ना बिछौना खादी का, सिलवा दिया गांधी बाबा ने॥
मनहूस विदेशी कपड़ों की, जलती हैं भारत में होली।
खादी की आँधी से रिपु को, दहला दिया गाँधी बाबा ने॥
जो पहिन साड़ियां परदेशी, चलती थीं भारत की बहनें।
खादी से उनका सुन्दर तन, सजवा दिया गांधी बाबा ने॥
सिर से पैरों तक है खादी, खादी की सुन्दर गङ्गा में।

है आज ज़माने के दिल का, नहला दिया गांधी बाबा ने॥
अब त्याग विदेशी कपड़ों को, वीरो ! पहिनो सुन्दर खादी।
खादी का झण्डा भारत में, गड़वा दिया गांधी बाबा ने॥

(१०)

खादी के धागे धागे में, अपनेपन का अभिमान भरा।
माता का इसमें मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा॥
खादी के रेशे रेशे में, अपने भाई का प्यार भरा।
माँ बहिनों का सत्कार भरा, बच्चों का मधुर दुलार भरा॥ १
खादी की रजत-चन्द्रिका जब, आकर तन पर मुसकाती है।
तब नवजीवन की नई ज्योति, अन्तस्थल में जग जाती है॥
खादी से दीन-निहत्थों की, उत्तप्त-उसास निकलती है।
जिससे मानव क्या पत्थर की, भी छाती कड़ी पिघलती है॥ २
खादी में कितने ही दलितों के, दग्ध हृदय की दाह छिपी।
कितनों की कसक-कराह छिपी, कितनों की आहत-आह छिपी॥
खादी में कितने ही नङ्गों, की भिखमङ्गों की है आस छिपी।
कितनों की इसमें भूख छिपी, कितनों की इसमें प्यास छिपी॥ ३
खादी तो कोई लड़ने का, है भड़कीला रण-गान नहीं।
खादी है तीर कमान नहीं, खादी है खड्ग कृपाण नहीं॥
खादी को देख देख तो भी, दुश्मन का दिल थहराता है।
खादी का झंडा सत्य शुभ्र, अब सभी ओर फहराता है॥ ४
खादी की गंगा जब सिर से, पैरों तक वह लहराती है।
जीवन के कोने कोने की, तब सब कालिख धुल जाती है॥
खादी का ताज चांद सा जब, मस्तक पर चमक दिखाता है

कतने ही अत्याचार-ग्रस्त, दीनों के त्रास मिटाता है॥ ५
खादी ही भर भर देश-प्रेम का, प्याला मधुर पिलावेगी।
खादी ही दे दे संजीवन, मुर्दों को पुनः जिलावेगी॥
खादी ही बढ़, चरणों पर पड़, नूपुर सी लिपट मनावेगी।
खादी ही भारत से रूठी, आज़ादी को घर लावेगी॥ ६

(११)

आज़ादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ावेंगे।
खादी का बाना पहिन लिया, आज़ादी ध्येय हमारा है।
आज़ादी पर मर मिटना है, हमने अब यही विचारा है॥
प्राणों की भेंट चढ़ावेंगे, हम बलि-वेदी पर जावेंगे। आज़ादी०
हम अमर, नहीं मरने का डर, यह तो जीवन की राह भली।
हैं शिवा प्रताप गये जिससे, है बीरों की यह वही गली॥
जननी के कष्ट छुड़ावेंगे, हम बलि-वेदी पर जावेंगे। आज़ादी०
हम बड़े शौक से पहिनेंगे, पहिनायेंगे जो हथकड़ियां।
जेलों में अलख जगाकर के, तोड़ेंगे माता की कड़ियां॥
अन्यायी राज्य मिटावेंगे, हम बलि-वेदी पर जावेंगे॥ आज़ादी०
भालों तलवारों तोपों से, हम कभी नहीं घबरावेंगे।
हम देश प्रेम मतवाले हैं, अब शूली पर चढ़ जावेंगे॥
भारत स्वाधीन बनावेंगे, हम बलि-वेदी पर जावेंगे। आज़ादी०

(१२)

है आज ज़माना हे वीरो, आज़ादी के दीवानों का।
जीवन धन सब कुर्बान करो, है आज समय बलिदानों का॥
तुम मांग रहे हो ऐ कायर, किससे अपने अधिकार कहो?

अपने पैरों पर आप डटो, तुम तजो आस परवानों का ॥
उच्च हिमालय से सागर, औ ब्रह्मपुत्र से गुरजर देश।
अटक कटक लौं आदर हो, अब गांधी के फरमानों का।
हो तौक गुलामी टूक टूक, माता के बन्धन कट जावें।
बलिवेदी पर बलि होने को, अब चले झुण्ड मरदानों का ॥
चल हिन्द देश में एक सिरे से, आग लगादे ऐ भाई।
हो देश बीच अब उथल-पुथल, औ खौले खून जवानों का ॥
फाँसी से अब तुम नहीं डरो, परवाह नहीं गोली बरसे।
हो खुली सँगीनों पै छाती, औ कौल रहे मरदानों का ॥

(१३)

ज़ालिम सरकार मिटायेंगे। वेदी पर भेंट चढ़ायेंगे ॥
आज़ादी के दीवाने हैं, मरने की मन में ठाने हैं।
पहिने केशरिया बाने हैं, गा रहे क्रान्ति के गाने हैं ॥
माता का मान बढ़ायेंगे। वेदी पर भेंट चढ़ायेंगे ॥
सब बाधा विघ्न ढकेलेंगे, हँस हँस कर संकट झेलेंगे।
वे जितने पापड़ बेलेंगे, हम उतने खुलकर खेलेंगे ॥
करनी का पाठ पढ़ायेंगे। वेदी पर भेंट चढ़ायेंगे ॥
मां की आंसू की लड़ियों को, रोको तोड़ो इन कड़ियों को।
आने दो अब हथकड़ियों को, जीने मरने की घड़ियों को॥
जेलों को तीर्थ बनायेंगे। वेदी पर भेंट चढ़ायेंगे ॥
घर २ में ज्योति जगायेंगे, यह भय का भूत भगायेंगे।
फिर ऐसी आग लगायेंगे, जिसमें दुश्मन जल जायेंगे ॥
कुछ करके आज दिखायेंगे, वेदी पर भेंट चढ़ायेंगे ॥

आओ प्यारे आह्वान हुआ, रण प्रांगण में घमसान हुआ।
आहुति दो यज्ञ विधान हुआ, जौहर का सब सामान हुआ॥
भारत स्वाधीन बनायेंगे, वेदी पर भेंट चढ़ायेंगे॥

(१४)

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगीं, दिन अच्छे आने वाले हैं।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे, हम जल्द सुनाने वाले हैं॥
माँ तुझको इन जल्लादों ने, दी है तकलीफ़ ज़ईफी में।
मायूस न हो मग़रूरों को, हम मज़ा चखाने वाले हैं॥
बेचैन हैं औ बेकस हैं हम, गो कुंजे कफस के क़ैदी हैं।
बेबस हैं लाख मगर माता, हम आफ़त के परकाले हैं॥
मेरी रूह को करना क़ैदो क़तल, इमकान से उनके बाहर है।
आज़ाद है अपना दिल शैदा, गो लाख ज़ुबां पै ताले हैं॥
यहां आये मुसाफिर बड़े बड़े मग़रूर फिर आख़िर चले गये।
यह भी अब परदेशी जल्दी, लंदन को जाने वाले हैं॥

(१५)

जोगी के बरन में हम निकले, ऐ अहले वतन तुम शाद रहो।
हम जान वतन पर देने को निकले हैं तुम आबाद रहो॥
घर बार सभी छोड़ा हमने, की है उल्फ़त आज़ादी से।
हम रहें रहें न रहें तुम तो, ऐ अहले वतन आज़ाद रहो॥
आज़ादी हम पर रोती है, मुंह अश्कों से हसरत धोती है।
अब बच्चे माँ से कहते हैं हम हों कि न हों तुम शाद रहो॥
तहरीक़ खुदा आज़ादी की, यूं राह हमें दिखलादी है।
अब आया वक्त रिहाई का, आज़ाद रहो आज़ाद रहो॥

(१६)

चलने दो हाथ निहत्थों पर, जत्थे पर जत्थे आवेंगे।
गान्धी के एक इशारे पर, लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे॥
तोड़ें कानून किताबों का, छापेखाने अखबारों का।
इस अनाचार के शासन को, हाथों-हाथों सर जावेंगे॥
मरते हैं वीर समर में ही, कायर सौ बार मरा करते।
यह जीवन जाल जवाल हुआ, मरकर भी अमर कहावेंगे॥
भागों से स्वर्ण सुयोग मिला, सेनापति गान्धी सा पाया।
इसलिए "दास" रण-गङ्गा में, खुल करके खूब नहावेंगे॥

(१७)

विदेशी कपड़ों को फूंक डालो, न पाप हत्या का ये कमाओ।
गुलामी की ये जँजीर भाई, बँधा है जिससे येप्यारा भारत।
है फर्ज़ सब मिल के इसका तोड़ो, औ कैद से गांधी को छुड़ाओ॥१
है बागे जलियाँ में हमको भूना, चलाये धरसाने में भी डंडे।
उन्हीं शहीदों की याद करके, बला है ये दूर इसे भगाओ॥२
न उट्ठे अब भी तो याद रक्खो, यों मौत कुत्तों की तुम मरोगे।
इसीलिये आओ! आओ!! आओ!!! कमर कसो दासता मिटाओ।
हा! बहिने मातायें जेल जायें, औ दुध मुँहे बच्चे गोली खायें॥३
इसी समय आप मुँह छिपायें, न देश के कुछ भी काम आयें।
तो इससे अच्छा है डूब मरना, न बोझ धरती का अब बढ़ाओ॥४

(१८)

निकल पड़ें मैदान जंग में, गर कोई अभिमानी है।
आज देखना है किसमें कितना दम कितना पानी है॥

उठ बैठो सब काम छोड़ कर, आज देश हित नरनार ।
बलिदानों का ढेर लगादो सब अपनी अपनी बारी ।।
रोती हैं दिल्ली दीवारें ओ भारत के बांके वीर ।
चूर चूर करदो सदियों की पराधीनता की ज़ंजीर ॥
आज हिन्द में फिर से मरकर, नई जान पहिनानी है ।
आज देखना है किसमें कितना० ॥
लाल जवाहिर लूट लिये हमने भी कुछ परवाह न की ।
भाई जवाहर लेने पर भी हमने मुख से आह न की ॥
प्राण जवाहिर आज छिन गया क्या चुपके रहजावोगे
शर्माओगे ज़रा नहीं क्या कुल में दाग़ लगाओगे ॥
ब्याज सहित इन बनियों से हमको सब रक़म चुकानी है ।
आज देखना है किसमें कितना० ॥
रण दुन्दुभी बजी गान्धी की, सहज कोई कप्तान नहीं ।
या होंगे आज़ाद नहीं तो तन में होगी जान नहीं ॥
किन्तु न कल से रहने देंगे, अकल ठिकाने कर देंगे ।
हम भारतीय आज मरकर,, माता की झोली भर देंगे ॥
'माधव' आज लाज गान्धी, मर मर कर उसे बचानी है ।
आज देखना है किसमें कितना दम कितना पानी है ॥

(१६)

भारत के शेर जागो, बदला है अब ज़माना ।
वालंटियर बनो तुम, अब छोड़ दो बहाना ॥
अब बुज़दिली न हरगिज़, तुम पास दो फटकने ।
आख़िर तो दम अदम को, होगा कभी रवाना ॥

देवी स्वतन्त्रता के, वीरो बनो उपासक।
अब पूर्वजों का अपने, गर नाम है चलाना॥
परदेशियों के इस दम, कपड़े जो हैं पहिनते।
उनको हराम है अब, भारत का आबो दाना॥
माता की कोख नाहक़, करते हो तुम कलंकित।
प्यारे वतन को अब तो, आज़ाद है कराना॥
दिल में झिझक न लाओ, आगे कदम बढ़ाओ।
है स्वर्ग के बराबर, इस वक्त जेल जाना॥
"सरजू"! समय यही है, कुछ करलो देश-सेवा।
दो दिन की ज़िन्दगी है, इसका नहीं ठिकाना॥

(२०)

स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे, यही हमारा कलाम होगा।
विदेशी चीज़ों को दूर ही से, हमारा अब तो सलाम होगा॥
वह क़त्ल करदें तो हम हैं राज़ी, वह क़ैद करदें तो हम ख़ुशी हैं।
मगर ये भारत विदेश वालो, न अब किसी का गुलाम होगा॥
नशा हुकूमत का छारहा है, वह ज़ुल्म हँस २ के कररहे हैं।
ख़ुदा की कूव्वत बहुत बड़ी है, सुराही होगी न जाम होगा॥
नसीब अपना चमक रहा है, ज़माना 'गाज़ी' वह आरहा है।
हमीं हुकूमत करेंगे बाहम, हमारा ही इंतज़ाम होगा॥

(२१)

तुम्हें गर बागे जलियां हर तरफ़ बनवाना आता है।
शहीद हमको भी अपने मुल्क पर हो जाना आता है॥
करो क्यों एक दो को क़ैद एकदम हुक्म ही दे दो।

तुम्हें गर बेकसों पै ज़ुल्म हो का ढाना आता है ॥
न घबड़ावो करो कुछ सब्र देखो ग़ौर करके तुम ।
तुम्हारे वास्ते गांधी लिये परवाना आता है ॥
जलाले जितना जी चाहे यह कहदो उस शमारू से ।
नया हर रोज़ जलने के लिये परवाना आता है ॥
हमारे चश्मे खूं से ज़ायक़ा नमक़ीन मिलता है ।
हमारे आसुओं को क्या नमक बन जाना आता है ॥

(२२)

हम अपनी भारत पर जान देंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ।
वतन की इज़्ज़त पर जान देंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
हज़ारों ज़ुल्मों सितम सहेंगे, ज़ुबां से उफ़ तक न हम कहेंगे ।
रहे अमल से न हम हटेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
हमारा गुलशन तबाह करदो, हमें भी खाके सियाह करदो ।
हमारी मिट्टी से गुल खिलेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
है ऐसी ज़िल्लत से मौत बेहतर, कि हँस रहा है ज़माना हमपर ।
जहां में अब जीके क्या करेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
हम आह गफ़लत में सोरहे थे, हम अपना इज़्ज़त को खोरहे थे ।
जो जागे हैं अब तो कुछ करेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
हमारे नालों से दिल हिलेंगे, फरिस्ते भी सुनकर कांप उठेंगे ।
जो रोके ख़ालिक से हम कहेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
कोई हमें क्या सता सकेगा, कोई हमें क्या मिटा सकेगा ।
खुदा है हामी तो क्यों मिटेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
हमारे खूं का बहेगा दरिया, तो होगा तूफ़ान हश्र बर्पा ।

यह कह के ज़ख्मे जिगर हसेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
गुलामी इन्सा की क्यों करें हम, सरे इतअत को क्यों करें हम।
गुलामी खालिक की बस करेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
कभी थे वक्ता जहान भर में, वही हैं जो फ़र्द थे हुनर में।
ज़लील होकर न हम जियेंगे स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
नहीं है जिस दिल में देश भक्ती कभी बढ़ेगी न शक्ति उसकी।
पुजारी हम देश के बनेंगे स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥
ये छेड़ अच्छी नहीं सितमगर, कि राह चलते सितम हैं हमपर।
कहां तक अब सब्र हम करेंगे, स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे ॥

(२३)

वतन की गुलामी छोड़ायेगा खद्दर, ग़रीबों की इज़्ज़त बचायेगा खद्दर।
हिन्दू है ताना मुसलमान बाना, बिनावट में दोनों को लायेगा खद्दर ॥
सड़ा लंका शायर मरा मानचेष्टर, विदेशी की धज्जी उड़ायेगा खद्दर।
जो कोई भी खद्दर से नफ़रत करेगे, उन्हें भूत बनकर सतायेगा खद्दर ॥
कहें गान्धी बाबा जो पहिनोगे खद्दर, तो शीघ्र स्वराज्य दिलायेगा खद्दर ॥

(२४)

इधर नाज़िल बलाये नागहानी देखते जावो।
उधर उनके दमन की नौजवानी देखते जावो ॥
चलाते हो हमीं पर तीर और हम उफ़ नहीं करते।
ज़बां रखते हैं लेकिन बेज़बानी देखते जावो ॥
ये छींटे खून की उस दामने क़ातिल कहाती है।
शहीदाने वतन की कुछ निशानी देखते जावो ॥
अभी लाखों ही बैठे हैं बुझाने को पियास अपनी।

ख़तम होजायगा खंजर का पानी देखते जाओ ॥
अरे साहब ज़िबह करने में क्यों मुह फेर लेते हो।
मेरी गरदन में खञ्जर की रवानी देखते जावो ॥
करेगा खूने नाहक़ कब तलक मज़लूम का ज़ालिम।
रहेगी कब तलक ये हुक्मरानी देखते जाओ ॥
हमारी आह से आतिश भड़क उट्ठेगी दुनियां में।
अजब गर्दिश है रंगत आसमानी देखते जावो ॥

(२५)

अब चैन न हम लेने देंगे, हम महा भयंकर काले हैं।
सोते जबतक थे तभी तलक, अब हमने होश सँभाले हैं ॥
तुम मौज अभी तक करते थे, मुहताज हमें कर दानों को।
शासन है या यह निरी लूट, हम इसे पलटने वाले हैं ॥
लूटा तुमने, इस तरह हमें, रह गया न कुछ बाकी घर में।
पर अब न दाल गलने देंगे, हम समझ गये सब चाले हैं ॥
क्या कभी भूल हम सकते हैं, ज़ुल्मों की करुण कहानी को।
बनरहे हाय जो जगह जगह, कितने ही जलियां वाले हैं ॥
तुम दमन करो परवाह नहीं, हँस हँस सहर्ष सब झेलेंगे।
अवधेश नहीं अब दब सकते, हम देश प्रेम मतवाले हैं ॥

(२६)

मेरी अँखियाँ दे सुन्दर सितारे ॥मेरी०॥
माता जी ने पूछिया कहाँ गये सुत चारे ॥मेरी०॥
दो बड़े इनमें शहीद हुए दो नीव डाल झुलारे ॥मेरी०॥
मारे गए तो क्या हुआ मेरे जीवें लख हजारे ॥मेरी०॥